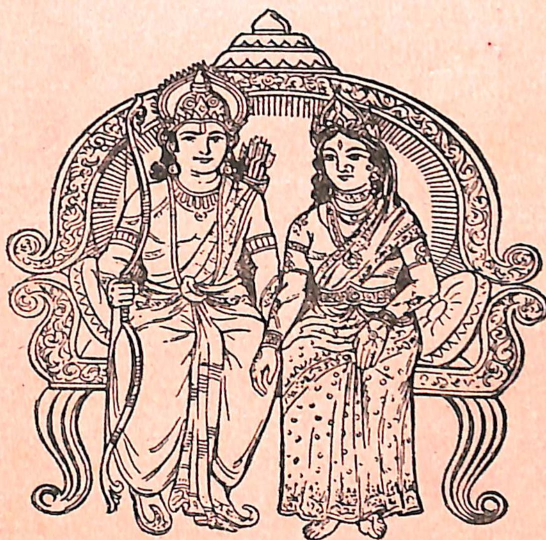
दिव्य स्तोत्र माला



शकुन्तला गोस्वामी

श्रीहित राधारंजन ग्रन्थमाला का अष्टम पुष्प

दिव्य स्तोत्र-माला

卐

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।।

卐

संकलयित्री—
शकुन्तला गोस्वामी

प्रकाशक :
श्रीराधारंजन सेवा संघ
७७ धर्मतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता—१३
फोन—२४.३२४८

तृतीयावृत्ति ३३०० प्रति

संकलयित्री :
शकुन्तला गोस्वामी
श्रीराधारंजन सेवा संघ
श्रीराधारंजन मन्दिर
राधा निवास वृन्दावन,

श्रावणमास :
सम्वत् २०३०
जुलाई, १९७३

न्यौछावर :
७५ पैसे

मुद्रक :
श्रीश्याम लाल हकीम,
श्रीहरिनाम प्रेस,
वृन्दावन। फोन—११५

दो शब्द

'दिव्य स्तोत्रमाला' भगवद्भक्तों के लिए हमारी एक और निराली भेंट है, जिसे बहन शकुन्तला गोस्वामी ने बड़े परिश्रम से आस्तिक सद्गृहस्थों के दैनिक नित्यकर्म से सम्बन्ध रखने वाले विषयों का सुन्दर संग्रह कर प्रस्तुत किया है। इस छोटी सी पुस्तिका में जो कुछ दिया गया है, अपने को हिन्दू कहलाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उतना तो जानना और कण्ठस्थ करना ही चाहिये। विशाल स्तोत्र-सागर में से चुन-चुन संग्रहीत किए गए इन स्तोत्र-रत्नों को एक माला में पिरोकर लेखिका ने इसे प्रत्येक कल्याणाभिलाषी जन के लिए कण्ठ में धारण करने योग्य रत्नमाला-सा बना दिया है, यह कहना अत्युक्ति न होगी। इस माला को कण्ठ में धारण कर श्रद्धालु नर-नारी निश्चय ही श्रीवनमाली के चरणारविन्द का सान्निध्य प्राप्त कर सकेंगे, इस विश्वास के साथ प्रस्तुत पुस्तक हम अपने पाठकों को भेंट कर रहे हैं। आशा है हमारे अन्य प्रकाशनों की तरह यह भी आपके लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

—प्रकाशक

प्रार्थना

आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली कड़ी का नाम ही 'प्रार्थना' है।

प्रार्थना में अपूर्व शक्ति है। नित्य नियमित प्रार्थना द्वारा जीवन को पवित्र बनाने से दिव्यशक्ति अवश्य प्राप्त होती है, महापुरुषों के उपदेशप्रद चरित्र इस 'सत्य' को सिद्ध करते हैं। यदि मांगना ही है, तो से ईश्वर मांगो; वही तो एक मात्र अपना है, उससे दुराव करके दूसरों से लगाव क्यों ?

प्रभु-प्रार्थना से हम अपनी महत्त्वाकांक्षाओं के मार्ग से आलस्य, अविश्वास, अनाचार, असत्य आदि विकारों के रोड़े आसनी से दूर कर सकते हैं। ईश्वर के राज्य में ईश्वर के ही अमरपुत्र (जीव) को दर-दर की ठोकर खानी पड़े, ऐसा क्यों?

संत-शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदासजी का यह मूलमन्त्र कभी न भूलो—

"आराम है राम के पाँयन में"

सच्चे मन से की गई प्रार्थना में श्रीराम के सामीप्य का दिव्य आनन्द-रसामृत जीवन में निरन्तर प्रवाहित करते रहने की शक्ति है। शक्ति के इस दिव्य स्रोत से हमें पूरी तरह लाभान्वित होना चाहिये

विश्व-विमोहिनी माया ने मोह, लोभ, ममता, अहंकार विकारों के विविध आकर्षक खेल खिलौनो में उलझाकर जीव (बालक) को उस परम पिता परमात्मा से अलग करा दिया। अब जीव का परम पुरुषार्थ यही है कि येन केन—प्रकारेण अपने पिता से ज्ञान—साधना द्वारा स्वयं जा मिले। अथवा

भक्ति साधना द्वारा ऐसी आर्त्त पुकार करे कि पिता स्वयं उससे आ मिले—

भौतिकवाद की चकाचौंध में फँसके यह सोचना—

"अभी तो चैन से गुज़रती है, आक़बत की खुदा जाने"

यह अपने आपको धोखा देना है। अनित्य, अपवित्र अनात्मभाव रत हो अविद्या कूप-मण्डूक बने रहना बुद्धिमत्ता नहीं है अपितु स्वाध्याय, ध्यान, एवं जप के सहारे वैराग्य, ज्ञान, भक्ति को सुदृढ़ करके दिव्य परमानन्द पथ में आगे बढ़ना है।

"जहँ जाय के लौटत फेर नहीं,

तदबीर करो मन वा पद की"

याद रखो—

आयुः कल्लोललोलं, कतिपय दिवसस्थायिनी यौवन-श्री
रर्थाः संकल्पकल्पा, धन समयतडिद्धिभ्रमा भोगपूराः।
कंठाश्लेषोपगूढं, तदपि च न गिरं, यत्प्रियाभिः प्रणीतं
ब्रह्मण्यासक्तचित्ता, भवत भवभयाम्भोधिपारंतरीतुम्॥

आयु, जल की लहरों के समान चंचल है, जवानी-थोड़े दिनों की है, धन मनके संकल्पों से भी कम देर ठहरने वाला है भोग—वर्षाकाल में चमकने वाली बिजली की चमक से भी अधिक चंचल है, पिय भार्या को गले लगाना भी चिरस्थायी नहीं है।

इसलिए, हे मनुष्यो ! भवसागर से पार होने के लिए परमात्मा की प्राप्ति का दृढ़ पुरुषार्थ करो—

प्रभु-प्रार्थना एवं पाठ-जप आदि में मन न लगे, तो भी नियम से करते चलो—

स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा है—

"**समुद्र " में गोता लगाने पर यदि मोती हाथ न लगें तो यह न समझो कि समुद्र में मोती नहीं हैं।**" बार.बार गोते लगाकर मोती ढूँढो, तभी सफलता मिलेगी। ईश्वर-प्राप्ति में यदि तुम्हारा प्रथम प्रयास निष्फल हो, तो अधीर न हो जाओ, निरन्तर प्रयत्न करते रहो, अन्त में ईश्वरीय कृपा अवश्य होगी।

ईश्वर कृपाभिलाषी मानव को प्रमाद आलस्यादि का परित्याग करके प्रतिदिन प्रातःकाल नियमपूर्वक ईश उपासना की आदत दृढ़ करनी होगी।

मानसिकवृत्तियों का ईश्वरोन्मुख होना,प्रेमपूर्वक प्रार्थना चिन्तन व ध्यानादि से ही सम्भव है। बाल्यावस्था के विशुद्ध अन्तःकरण में यह प्रेम आसीनी से उत्पन्न किया जा सकता है। अतः आप सभी से मेरा हार्दिक अनुरोध है कि स्वयं को सम्भालने के साथ-साथ अपने अबोध बालक-बालिकाओं को अवश्य ही पवित्र जीवन-यापन की कला में पारंगत कराइए। यह 'कला' किसी भी स्कूल, कॉलेज में प्राप्त न होगी,यह माँ की ममता भरी गोद में, पिता के ज्ञानवर्धक उपदेश आदेश के अन्दर अनुशासन युक्त जीवन में ही बालक प्राप्त कर सकते हैं।

जिस शिक्षा से बालक की मानसिक वृत्ति आत्मतत्त्व से दूर होकर देह में रम जाए, ईश्वर से विमुख होकर केवल मायामय हो जाए, उदारता को त्याग कर स्वार्थपरता को अपनाए, आस्तिकता को नष्ट करके नास्तिकता जगाए' वह शिक्षा नहीं, कुशिक्षा है; तन-मन की दिव्यशक्ति यदि विद्यार्थी-जीवन में नहीं जागी तो विद्या की नहीं अविद्या का ही उपासक कहयाए गा।

अतएव माता-पिता का पुनीत कर्त्तव्य हो जाता है कि वे अपने बालकों को खाने-कमाने की आधुनिक विद्या के साथ-साथ घर में अध्यात्म विद्या (ब्रह्मविद्या) की शिक्षा भी अवश्य देते रहें। वरना, इस घोर कलिवाल में 'मानवधर्म' एकदम लुप्त होकर 'दानव धर्म' का ही सर्वत्र प्रचंड प्रभाव व्याप्त हो जाएगा।

इसके हेतु सबसे सरल नियम यह है कि सर्वप्रथम अपने परिवार के सभी छोटे-बड़े सदस्यों को साथ लेकर सायं-प्रातः नियमित प्रभु प्रार्थना का नियम बना लें। फिर एक-एक करके अपने दुर्गुण-दुर्विचारों को कम करते हुए पवित्र-प्रेमपूर्ण शुभ जीवन व्यतीत करने का संकल्प प्रति दिन दृढ़ करते चलें।

दैनिक उपासना की सुविधा के हेतु प्रस्तुत पुस्तक में विविध प्रार्थनाएं संकलित की गई हैं। समय का ध्यान रखते हुए पुस्तक का लघु आकार ही उचित लगा, कारण वृहदाकार ग्रन्थ को देखकर समय के अभाव से उसे खोलने में भी व्यक्ति भय पाते हैं। इस छोटे से संकलन को आप उपयोग में लाएँगे, तभी हमारा प्रयास सफल होगा। किन्तु एक बात सदैव ध्यान में रखें, प्रार्थना के जो शब्द मुँह से निकाले उनके साथ भाव-पूर्ण मन का होना आवश्यक है। 'भाव' के अभाव से ही जीवन में समस्त अभाव उत्पन्न होते हैं। विशेषतः **"भावग्राही जनार्दनः"** यह उक्ति हमें याद रखनी होगी।

× × ×

भाव बिना बाजार की, वस्तु मिले नहीं मोल।
भाव बिना हरि क्यों मिलें, भाव सहित हरि बोल ॥

—शकुन्तला गोस्वामी

प्रभु प्रेमकी साधना और सिद्धि

प्रथम साधना है इसकी, इन्द्रिय-भोगोंका मन से त्याग।
हरि की प्रीति बढ़ाने वाले, सत्कर्मों में अति अनुराग॥
कठिन काम-वासना पाप का, करके पूरी तरह विनाश।
दंभ-दर्प, अभिमान-लोभ-मद, क्रोध-मान का करके नाश॥
परचर्चा का परित्याग कर, विषयों की तज सब अभिलाष।
मधुमय चिन्तन नाम-रूप का, मन में प्रभु पर दृढ़ विश्वास॥
हरि-गुण-श्रवण, मनन लीलाका, लीला-रसमें रति निष्काम।
प्रियतम-भाव सदा मोहन में, प्रेम-कामना शुचि, अभिराम॥
सर्व-समर्पण करके हरिको, भोग-मोक्षका करके त्याग।
हरि के सुख में ही सुख सारा, हरिचरणों में ही अनुराग॥
भोग-मोक्ष-रुचि-रहित परम जो, अन्तरङ्ग हरिप्रेमी संत।
उनका विमल सङ्ग, उनकी ही, रुचिमें निज रुचिका कर अन्त॥
पावन प्रेमपंथ के साधक, करके तब लीलाचिन्तन।
श्यामा-श्याम-कृपा से फिर वे, कर पाते लीला-दर्शन॥
गोपी-भाव समझकर तब वे, होते हैं शुचि साधनसिद्धि।
रस-साधन में सिद्धि प्राप्तकर, पाते गोपीरूप विशुद्ध॥
फिर लीला में नित्य सम्मिलित, हो बन जाते प्रेमस्वरूप।
परम सिद्धि यह प्रेम-पंथ की, यही प्रेम का निर्मल रूप॥

"कल्याण"



चिन्तन



रे चित्त चिन्तय चिरं चरणौ मुरारेः
पारं गमिष्यसि यतो भवसागरस्य ।
पुत्राः कलत्रमितरे न हि ते सहायाः
सर्वं विलोकय सखे मृग-तृष्णिकाभम् ॥

अरे चित्त ! तू निरन्तर श्रीहरि के चरणों का चिन्तन कर, जिससे तू भवसागर के पार हो सकेगा। पुत्र-कलत्र तथा अन्य बन्धु-बान्धव कोई भी तेरे सहायक नहीं होंगे। इसलिए, हे मित्र ! तू इन सबको मृगतृष्णा के जल के समान मिथ्या समझ।







दिव्य-स्तोत्र-माला

नित्यकर्म नियम

प्रातः जागते ही अपने हाथों को देखना—

करागे वसते लक्ष्मीः, करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा, प्रभाते करदर्शनम् ॥

नेत्र बन्द करके बड़े प्रेमपूर्ण हृदय से प्रातः श्रीराम स्मरण करना—

प्रातः स्मरामि रघुनाथमुखारविन्दं
मन्दस्मितं मधुरभाषि विशाल-भालम्।
कर्णावलम्बि-चलकुण्डल-शोभिगण्डं
कर्णान्त-दीर्घ-नयनं नयनाभिरामम् ॥

श्री नन्दनन्दन स्मरण

बालं नवीन-शतपत्र-विशाल-नेत्रम्,
बिम्बाधरं सघनमेघ-रुचिं मनोज्ञम् ।
मन्दस्मितं मधुर-सुन्दर-मन्दयानं,
श्रीनन्दनन्दनमहं मनसा स्मरामि ।।

महापुरुष वन्दना

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं,
तीर्थास्पदं शिव-विरिंचिनुतं शरण्यम् ।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल-भवाब्धि-पोतं,
वंदे महापुरुष ते चरणारविंदम् ।

श्रीगणपति-वन्दना

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबंधुं,
सिंदूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम् ।
उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्ड-
माखण्डलादिसुरनायकवृन्द-वंद्यम् ।

पृथ्वी पर पैर रखने से पहले प्रार्थना—

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

स्नान करते समय

तीर्थों का आवाहन करना (बुलाना)—

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

श्री सूर्य को अर्घ्य देना—

एहि सूर्य सहस्रांशो, तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां देव, गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

श्री सूर्य को प्रणाम करना—

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे,
जगत्प्रसूति-स्थिति-नाश-हेतवे ।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे,
विरिंचि-नारायण-शंकरात्मने ॥

श्रीसूर्यदेव के सिद्ध २१ नाम

विकर्तनो, विवस्वांश्च, मार्तण्डो, भास्करो, रवि ।
लोकप्रकाशक, श्रीमान्, लोकचक्षु, महेश्वरः ॥
लोकसाक्षी, त्रिलोकेश, कर्त्ता, हर्त्ता, तमिस्रहा ।
तपनस्तापनश्चैव, शुचि, सप्ताश्व, वाहनः ॥
गभस्ति हस्तो, ब्रह्मा च सर्वदेव नमस्कृत ।

॥ श्रीसूर्याय नमः ॥

शनि के दस नाम

कोणस्थः, पिंगलो, बभ्रुः, कृष्णो, रौद्रंतको यमः ।
शौरिः, शनैश्चरो मन्दः, पिप्पलादेन संस्तुतः ॥
एतानि दशनामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
शनैश्चरकृता पीड़ा, न कदाचित् भविष्यति ॥

इन दस नामों को सवेरे उठते ही श्रद्धापूर्वक लेने से शनि ग्रह की शान्ति होती है ।

श्री तुलसीजी की वन्दना—

महाप्रसाद-जननी, सर्वसौभाग्य-दायिनी ।
आधि-व्याधिहरा नित्यं, तुलसि त्वां नमोस्तु ते ॥

तुलसीपत्र उतारने का मन्त्र—

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया ॥
केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने ॥

संक्रान्ति, अमावस, द्वादशी, पूर्णिमा, रविवार और संध्या (शाम) के समय तुलसी नहीं तोड़नी चाहिये ।

गौ को प्रणाम करना—

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च ।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च, पवित्राभ्यो नमो नमः ॥

हाथ में जल ले मन्त्र पढ़कर आसन के नीचे छींटे देकर आसन शुद्ध करें ।

पृथ्वि त्वया धृता लोकाः, देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि, पवित्रं कुरु चासनम् ।।

इस मन्त्र से शरीर पर जल के छींटे देना—

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।

आचमन का मन्त्र—

केशवाय नमः । माधवाय नमः । नारायणाय नमः ।

तिलक मन्त्र—

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहितायच ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविंदाय नमो नमः ।

तुलसी दल अर्पण करने का मन्त्र—

तुलसीं हेमरूपां च, रत्नरूपां च मंजरीम् ।
भव-मोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियां ।।

बिल्वपत्र अर्पण का मन्त्र—

त्रिदलं त्रिगुणाकारं, त्रिनेत्रं च त्रयायुधम् ।
त्रिजन्म-पापसंहारं,बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।

धूप-दीप, नैवेद्य अर्पण मन्त्र—

त्वदीयं वस्तु गोविन्द, तुभ्यमेव समर्पितम् ।
गृहाण सुमुखो भूत्वा, प्रसीद परमेश्वर ।।

आरती मन्त्र—

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥
"दीपं दर्शयामि ।"

पुष्पांजलि मन्त्र—

सेवन्तिका, वकुल, चम्पक-पाटलाब्जैः,
पुन्नाग, जाति, करबीर, रसाल-पुष्पैः ।
बिल्व, प्रवाल तुलसीदल, मालतीभिः ।
त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद ॥

क्षमा-प्रार्थना—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ।
यत्पूजितं मया देव ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ।
पूजांचैव न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर ॥

प्रदक्षिणा मन्त्र—

यानि कानि च पापानि, जन्मान्तर-कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति, प्रदक्षिणं पदे-पदे ॥

चरणामृत-ग्रहण-मन्त्र—

अकालमृत्युहरणं, सर्व-व्याधि-विनाशनम् ।
विष्णुपादोदकं पीत्वा, पुनर्जन्म न विद्यते ॥

प्रार्थना—

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

हे राम पुरुषोत्तम नरहरे नारायण केशव ।
गोविंद गरुडध्वज गुणनिधे दामोदर माधव ।
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ।
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम् ।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः
प्राणा शरीरं गृहम् ।
पूजा ते विषयोपभोगरचना
निद्रा समाधिस्थितिः ॥
संसारः प्रदयोः प्रदक्षिणविधिः
स्तोत्राणि सर्वा गिरः ।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं
शम्भो तवाराधनम् ॥

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीर्नंदनाय च ।
नंदगोपकुमाराय गोविंदाय नमो नमः ॥

गोविंदम् गोकुलानंदम् वेणुवादनतत्परम् ।
राधिकारंजनं श्यामं वन्दे गोपालनंदनम् ॥

जयतु जयतु देवो, देवकीनन्दनोऽयं,
जयतु जयतु कृष्णो, वृष्णिवंशप्रदीपः ।
जयतु जयतु मेघश्यामलः, कोमलांग,
जयतु जयतु पृथ्वी-भारनाशो मुकुन्दः॥

कृष्णाय वासुदेवाय, हरये परमात्मने ।
प्रणत-क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः ॥

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्यभावेन, प्रसीद परमेश्वर ॥

सायं दीप स्तुति—

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म, दीपो ज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं, संध्यादीप नमोऽस्तु ते ॥

एक श्लोकी रामायण—

आदौ रामतपोवनादि-गमनं हत्वा मृगं कांचनम्,
वैदेही-हरणं जटायुमरणं सुग्रीव-सम्भाषणम् ।

बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरी-दाहनम्,

पश्चाद्रावणकुंभकर्णहननं एतद्धि रामायणम्॥

एकश्लोकी भागवत—

आदौ देवकी-देवगर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनम्,

मायापूतनजीवितापहरणं गोवर्द्धनोद्धारणम् ।

कंसाच्छेदनकौरवादि-हननं कुंतीसुतापालनम्,

एतद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ॥

एकश्लोको महाभारत—

आदौ पांडवधार्तराष्ट्रजननं लाक्षागृहे दाहनम्,

द्यूत-स्त्रीहरणं वने विचरणम् मत्स्यालयाबेधनम् ।

लीलागोहरणम् रणे विचरणम् संध्याक्रियावर्धनम्,

पश्चाद्भीष्मसुयोधनादि-हननं एतन्महाभारतम्॥



अथ सन्ध्या-प्रारम्भः

बायें हाथ में जल रखकर नीचे लिखा मंत्र पढ़कर कुशा से शरीर पर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

त्र्यम्बकं मन्त्र से अथवा अग्निरितिमन्त्र में भस्म लगावे । ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः पढ़कर आचमन करे, गोविन्दाय नमः कहकर हाथ धोले ।

बायें हाथ में बहुत से कुश तथा दाहिने हाथ में पवित्री धारण करे । इसके बाद ओंकार पूर्वक गायत्री मन्त्र से शिखा को बाँधे ।

दाहिने हाथ में तीन कुशा और जल लेकर संकल्प करे । संकल्प में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ उसका नाम उच्चारण करना चहिये ।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भारतवर्षे (भरतखण्डे) जम्बूद्वीपे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अस्मिन् वर्तमाने अमुक नामसंवत्सरे अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (वर्मा-गुप्तो वा) ऽहं संध्योपासनं कर्म करिष्ये ।

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़े—

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः ॥

नीचे लिखे मंत्र को पढ़कर आसन पर जल छिड़क कर शुद्ध करें—

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

नीचे लिखे मंत्र से आचमन करें—

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभिद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्य जायत ततः समुद्रोऽअणवः । समुद्रादर्णवादधिसंव्वत्सरोऽजायत । अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् । दिवञ्च पृथ्वीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥१॥

नीचे लिखे एक-एक विनियोग को पढ़-पढ़ कर पृथ्वी पर जल छोड़ें—

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः ॥ ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र-जमदग्नि भारद्वाजगौतमात्रिवशिष्ठकश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णि गनुष्टुब्बृहतीपंक्ति त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पति वरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनि-योगः ॥ ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवताग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः ॥ ॐ शिरसः प्रजापतिऋषिस्त्रिपदा गायत्री छन्दो ब्रह्माग्निर्वायुस्सूर्यो देवता यजुः प्राणायामे विनियोगः ।

पद्मासन से बैठकर गुदा चक्र को कुछ ऊपर खींचकर पहले अंगूठे से दाहिना नथना बन्द कर बायें से धीरे-धीरे वायु

को खींचे इसी का नाम पूरक (बाह्यवायोरन्तःप्रवेशनं पूरकः) है। वायु खींचते समय शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये हुए नीलवर्ण श्रीविष्णु भगवान् का ध्यान नाभि में करे। इसके बाद अँगूठा और अनामिका से दोनों नथने बन्द करके वायु रोके। इसका नाम कुम्भक (प्रवेशितस्य धारणं कुम्भः) है। उस समय पद्मासन पर बैठे श्रीब्रह्माजी का ध्यान हृदय में करे। इसके बाद अँगूठा हटाकर दाहिने नथने से वायु को धीरे-धीरे बाहर निकाले, यह रेचक (धृतस्य बहिर्निःसारण रेचकः) है। इस समय श्रीशिवजी का ध्यान ललाट में करे। इस मन्त्र को तीन-तीन बार या जैसा अभ्यास हो पढ़कर प्राणायाम करना चाहिए।

ॐ के साथ गायत्रीमन्त्र पढ़कर रक्षा के लिए अपने चारों ओर जल छिड़क दें।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।। ॐ आपोज्योतिरसोमृत ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।।

किसी भी विनयोग को हाथ में जल लेकर पढ़ना चाहिये, उस जल को किसी पात्र में या पृथ्वी पर छोड़ देना चाहिए।

प्रातःकाल के आचमन का विनियोग—

ॐ सूर्यश्चमेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता। अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

नीचे लिखे मंत्र को पढ़कर आचमन करें—

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि। इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा!!

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर आचमन करे—

ॐ आपः पुनन्विति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता, अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।।

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर आचमन करे—

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम् । पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम् ।। यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम । सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रितग्रह स्वाहा ।।

सायङ्काल आचमन का विनियोग—

अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।।

नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर आचमन करे—

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्यु पतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्सदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि । इदमह माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।।

मार्जन का विनियोग—

ॐ आपोहिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीपऋषि गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः ।।

ॐ अपोहिष्ठामयो भुवः । ॐ तानऊर्जे दधातन । ॐ महेरणाय चक्षसे । ॐ यो वः शिवतमो रसः । ॐ तस्य भाजयतेह नः । ॐ उशतीरिव मातरः । ॐ तस्मा अरङ्ग मामवः । ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ । ॐ आपोजनयथा च नः ।।

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथिवी पर जल छोड़ दे—

ॐ द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः ।।

दाहिने हाथ में जल लेकर बायें हाथ से ढँककर नीचे का मन्त्र तीन बार पढ़कर उस जल को सिर पर छिड़क दे।

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ।।

अघमर्षण मन्त्र का विनियोग—

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृतो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः ।।

दाहिने हाथ में जल लेकर उसे नाक से लगाके ही एक बार या तीन बार नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर बायें तरफ फेंक दे।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णव समुद्रादर्णवादधिसंव्वत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ।।

आचमन का विनियोग—

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।।

नीचे के मन्त्र को पढ़कर आचमन करे—

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं बषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम् ।। ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

सूर्य को अर्घ्य दान

नीचे लिखे गायत्री मंत्र से तीनबार सूर्य को अर्घ्य दे—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

सूर्यार्घ्य दान प्रकार

सूर्य के सामने एक पैर से खड़ा होकर, ओंकार, व्याहृतियुक्त गायत्री मन्त्र तीन बार जपकर सूर्यार्घ्य दे, उस समय यह ध्यान रहे कि दोनों के अँगूठे और तर्जनी एक में लगी न रहें किन्तु अलग-अलग रहें, नहीं तो वह राक्षसी मुद्रा हो जाती है, उससे वह जल रक्त के समान हो जाता है ।

एक अथवा दोनों पैरों से खड़ा होकर सुन्दर कमल सरीखे अञ्जलि बाँधकर अथवा दोनों हाथों को पूरा उठाकर श्री सूर्यनारायण भगवान् का उपस्थान करे ।

सूर्योपस्थान के विनियोग

नीचे लिखे चारों विनियोगों को एक-एक करके पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़े—

ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूपऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता । सूर्योपस्थाने विनियोगः ।। ॐ उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषि र्गायत्रि छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।। ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।। ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीत पुरउष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।।

एक अथवा दोनों पैरों से खड़ा होकर और दोनों हाथ ऊपर उठाकर सूर्यनारायण का उपस्थान करे।

ॐ उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरं। देवं देवत्रा सूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम्॥ ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः॥ दृशेविश्वाय सूर्यम्॥ ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकंचक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्॥ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ श्रृणुयाम शरदः शतं॥ प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

इसके बाद बैठकर या खड़े ही अंगन्यास करे।

एक-एक को पढ़ता जाय और जिस न्यास में जिस अंग का नाम हो, उस अंग पर हाथ लगाता जाय तथा अन्त में एक ताली बजाकर चारों ओर चुटकियाँ बजा दे। यों तीन बार करे।

ॐ हृदयाय नमः, ॐ भूः शिरसे स्वाहा, ॐ भुवः शिखाय वषट्, ॐ स्वः कवचाय हुम्, ॐ भूर्भुवः नेत्राभ्यां वौषट, ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्॥

गायत्री जप का विनियोग

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः जपे विनियोगः॥ ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टपम्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्याः देवता जपे विनियोगः॥ ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः॥

श्रीगायत्री देवि का ध्यान

नीचे के मन्त्र में जैसा स्वरूप बताया गया है, मन्त्र पढ़ता हुआ वैसा ही ध्यान करे।

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता॥ आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोक-गताथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दे—

ॐ तेजोसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीछन्दः। गायत्र्यावाहने विनियोगः॥

नीचे लिखे मन्त्रों से विनयपूर्वक गायत्रीदेवी का आवाहन करे—

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामासि प्रियं देवा-नामनाद्दृष्टं देवयजनमसि॥

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्य से नमस्ते तुरीयाय दर्शिताय पदाय परोरजसेऽसावदोम्॥

गायत्री-प्रार्थना

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर गायत्री के स्वरूप का ध्यान करे—

ओं श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता॥

आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा ।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ॥

गायत्री-मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

गायत्री-विसर्जन

उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतमूर्धनि ।
ब्रह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम् ॥

गायत्री का जप १०८ बार विधिपूर्वक तीनों काल में करना चाहिए ।

महामृतुञ्जय मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात् ॥

प्रार्थना

असतो मा सद्गमय !
तमसो मा ज्योतिर्गमय !!
मृत्योर्माऽमृतं गमय !!!

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

卐●卐



卐 श्री गणेशाय नमः 卐

नारद उवाच—

प्रणम्य शिरसा देवं, गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्य,-मायुः कामार्थसिद्धये ॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च, एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्ण-पिंगाक्षं, गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥
लम्बोदरं पंचमं च, षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजं च, धूम्रवर्णं तथाष्टकम् ॥
नवमं भालचन्द्रं च, दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं, द्वादशं तु गजाननम् ॥
द्वादशैतानि नामानि, त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नर ।
न च विघ्नभयं तस्य, सर्वसिद्धिकरं नृणाम् ॥

—★—

ॐ नमः शिवाय

ॐकारं विन्दुसंपुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमो नमः ॥

नमन्ति ऋषयो देवाः, नमन्त्यप्सरसां गणैः ।
नरा नमन्ति देवेशं, नकाराय नमो नमः ॥
महादेवं महात्मानं, महाध्यानं परायणः ।
महापापहरं देवं, मकाराय नमो नमः ॥
शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रह कारकम् ।
शिवमेकपदं नित्यं, शिकाराय नमो नमः ॥
वाहनं वृषभो यस्य, वासुकिः कंठ भूषणम् ।
वामे शक्तिधरं देवं, वकाराय नमो नमः ॥
यत्र यत्र स्थितो देवः, सर्वव्यापी महेश्वरः ।
यो गुरुः सर्व देवानां, यकाराय नमोनमः ॥



श्री शंकर कीर्तन



महादेव शिवशंकर शंभो, उमाकान्त हर त्रिपुरारे ।
मृत्युंजय वृषभध्वज शूलिन्, गंगाधर मृड मदनारे ॥
हर शिवशंकर गौरीशं, वन्दे गङ्गाधरमीशम् ।
रुद्रं पशुपतिमीशानं, कलये काशीपुर-नाथम् ॥
जय शंभो,जय शंभो, शंभो गौरीशङ्कर जय जय शंभो ।

संकट मोचन अष्टक

श्रीमार्कण्डेय उवाच—

आनन्दकानने देवी, संकटा नाम विश्रुता ।
वीरेश्वरोत्तरे भागे, पूर्वं चन्द्रेश्वरस्य च ॥
श्रृणु नामाष्टकं तस्य, सर्वं सिद्धिकरं नृणाम् ।
संकटा प्रथमं नाम, द्वितीयं विजया तथा ॥
तृतीयं कामदा प्रोक्तं चतुर्थं दुःख हारिणी ।
सर्वाणी पंचमं नाम, षष्ठं कात्यायनी तथा
सप्तमं भीमनयना, सर्वरोगहराष्टमम् ॥
नामाष्टकमिदं पुण्यं, त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ।
यः पठेद् पाठयेद्वापि, नरो मुच्येत संकटात् ॥



सर्व-मंगल-मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ-साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि नमोस्तु ते ॥



श्रीकृष्ण के बारह नाम

श्रीकृष्ण उवाच—

किं ते नाम सहस्त्रेण, विज्ञातेन तवार्जुन ।
तानि नामानि विज्ञाय, नरः पापैः प्रमुच्यते ॥
प्रथमं तु हरिं विद्याद्, द्वितीयं केशवं तथा,
तृतीयं पद्मनाभं च चतुर्थं वामनं स्मरेत् ।
पंचमं वेदगर्भं तु षष्ठं च मधुसूदनम् ॥
सप्तमं वासुदेवं च, वाराहं चाष्टमं तथा,
नवमं पुण्डरीकाक्षं दशमं तु जनार्दनः ।
कृष्णमेकादशं विद्याद्, द्वादशं श्रीधरं तथा,
एतत् द्वादश नामानि, विष्णु प्रोक्ते विधीयते ॥
सायं प्रातः पठेन्नित्यां, तस्य पुण्यफलं श्रृणु ॥

卐✻卐

कृष्णाय वासुदेवाय, हरये परमात्मने ।
प्रणतक्लेशनाशाय, गोविन्दाय नमोनमः ॥

—★—



देवी स्तुति (श्री सरस्वती)

शुक्लां ब्रह्मविचार-सारपरमा-
माद्यां जगद्व्यापिनीं ।
वीणा-पुस्तकधारिणीमभयदां,
जाड्यान्धकारापहाम् ॥
हस्ते स्फाटिक-मालिकां विदधतीं,
पद्मासने संस्थितां ।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं,
बुद्धिप्रदां शारदाम् ।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदंडमंडितकरा, या श्वेत-पद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः, सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती, भगवती निःशेष-जाड्यापहा ॥

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।
सर्वदा सर्वदास्माकं, सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

卐★卐

महालक्ष्मीजी



卐

नमस्तेऽस्तु महामाये, श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंखचक्रगदाहस्ते, महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥
नमस्ते गरुडारूढे, कोलासुरभयङ्करि ।
सर्वपापहरे देवि, महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥
सर्वज्ञे-सर्ववरदे, सर्वदुष्ट-भयंकरि ।
सर्वदुःखहरे देवि, महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि, भुक्ति-मुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रमूर्ते सदा देविः महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥
आद्यन्तरहिते देवि, आद्यशक्ति महेश्वरि ।
योगजे योगसंभूते, महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥

स्थूल-सूक्ष्म-महारौद्रे, महाशक्ति महोदरे ।
महापापहरे देवि, महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥
पद्मासनस्थिते देवि, परब्रह्म-स्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥
श्वेताम्बरधरे देवि, नानालंकारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं, यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति, राज्यमाप्नोति सर्वदा ॥





महा दुर्गा स्तुति

दुर्गा दुर्गातिशमनी, दुर्गापद्विनिवारिणी ।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्ग,-साधिनी दुर्गनाशिनी ।।
दुर्गतोद्धारिणी दुर्ग,- निहन्त्री दुर्गमापहा ।
दुर्गमज्ञानदा, दुर्ग,- दैत्यलोकदवानला ।।
दुर्गमा दुर्गमालोका, दुर्गमात्मस्वरूपिणी ।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिताः ।।
दुर्गमज्ञानसंस्थाना, दुर्गमध्यानभासिनी ।
दुर्गमोहा दुर्गमगा, दुर्गमार्थस्वरूपिणी ।।
दुर्गमासुरसंहन्त्री, दुर्गमायुधधारिणी ।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता, दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ।।
दुर्गभीमा दुर्गभामा, दुर्गभा दुर्गदारिणी ।
नामावलिमिमां यस्तु, दुर्गाया मम मानवः ।।
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो, भविष्यति न संशयः ।।

निर्देश:—

रात्रि को सोने से पहले दिन में किए गए समस्त कर्मों को याद करे। मन ने ईश्वर-चिन्तन अधिक किया अथवा विषय चिन्तन ? स्वांस-स्वांस में नाम-जप किस मात्रा में चलता रहा ? दिन भर के कार्य में उपकार अधिक किया या अपकार? सत्य का पक्ष लिया या असत्य का ? यह हिसाब रखने को एक डायरी अवश्य साथ रहे, उसमें सोने से पहले अपने भाव-कुभाव संक्षेप मे लिखते रहें, और प्रतिदिन 'भाव' बढ़ाते जाएँ, 'कुभाव' घटाते जाएँ । यह सदैव याद रखें —

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥

(गीता—६ अ०)

अर्थ—मनुष्य को चाहिये अपने द्वारा अपना उद्धार करे (संसार समुद्र से पार उतरे) ।

अपने आत्मा को अधोगति में न पहुंचावे क्योंकि यह जीवात्मा आप ही तो अपना मित्र है, और आप ही अपना शत्रु है । अर्थात्, संसार में दूसरा कोई शत्रु या मित्र नहीं है ।

"साधन-धाम" मानव-शरीर को हमें "विषय-धाम" बनाकर बरबाद करने का क्या अधिकार है ? प्रमाद, आलस्य, निद्रा आदि अन्य सभी विकारों से सावधान रहना ही सबसे बड़ी साधना है ।



नीचे लिखे रक्षा-कवच का पाठ करके पूर्व या दक्षिण दिशा की तरफ सिर करके हरिनाम स्मरण करते हुए निद्रा लेने से तन, मन, धन, जीवन को 'शक्ति' एवं 'श्री' —वृद्धि होगा। अनुभव करके देखिये।



रक्षा-कवच

जले रक्षतु वाराहः, स्थले रक्षतु वामनः।
अटव्यां नारसिंहश्च, सर्वतः पातु केशवः॥
अगस्तिर्माधवश्चैव, मुचुकुन्दो महाबलः।
कपिलो मुनिरास्तीकः, पंचैते सुखशायिनः॥
सर्पापसर्प भद्रं ते, दूरं गच्छ महाविष।
जनमेजयस्य यज्ञान्ते, आस्तीकवचनं स्मर॥
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं, स्थिति-संहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णो, रतुलां तेजसः प्रभुः॥
तिस्रो भार्य्याः कफल्लस्य, दाहिनी मोहिनी सती।
तासां स्मरणमात्रेण, चौरो गच्छति निष्फलः॥

× × ×

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्॥

(गीता—१०अ०)





श्री मधुर अष्टकम्



अधरं मधुरं वदनं मधुरं, नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं चरितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥
वचनं मधुरं चरितं मधुरं, वसनं मधुरं वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरो, पाणी मधुरौ पादौ मधुरौ ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।
करणं मधुरं तरणं मधुरं, हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।
गुंजा मधुरा माला मधुरा, यमुना मधुरा वीचिर्मधुरा ।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।
गोपी मधुरा लीला मधुरा, युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम् ।
दृष्टं मधुरं सृष्टं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।
गोपा मधुरा गावो मधुरा, यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।



श्रीकृष्ण स्तोत्र

श्रीकृष्णचन्द्र मुकुन्द आनन्दकन्द द्वन्द्व विमोचनम् ।
करुणाकरं कमलापतिं, कंजारुणायत-लोचनम् ।।
कालिंदी-कूल-कदम्ब-तरु-तल-वेणुवादन-तत्परम् ।
बलदायिनं वरदायिनं जयदायिनं राधावरम् ।।
सद्धर्म-ध्वंसकदैत्य-कंस, नृशंस-दर्प-विभञ्जनम् ।
भयभंजनं खल-गंजनं, सुरसिद्धमुनिमनरञ्जनम् ।।

प्रणमामि शोभाधाम श्याम, ललाम-कुंज-विहारिणम् ।
रुजहारिणं सुखकारिणं, गोपाल-गिरवरधारिणम् ॥

अच्युतं केशवं रामनारायणं,
कृष्णदामोदरं वासुदेव हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं,
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥

"श्रीकृष्णःशरणं मम"

—★—

गीता द्वादश अध्याय

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते ।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते ।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥२॥
ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते ।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥३॥
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥४॥

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥५॥
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥६॥
तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥७॥
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥८॥
अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् ।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ॥९॥
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव ।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥१०॥
अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्त्तुं मद्योगमाश्रितः ।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥११॥
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥१२॥
अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥१३॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१४॥

श्रीराधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र





मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणि
प्रसन्नवक्त्रपंकजे निकुंजभूविलासिनी ।
व्रजेन्द्रभानुनन्दिनि व्रजेन्द्र-सूनुसङ्गते*
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम् ॥

भावार्थ—मुनीन्द्र वृन्द जिनके चरणों की वन्दना करते हैं तथा जो तीनों लोकों का शोक दूर करने वाली हैं, मुस्कान-युक्त प्रफुल्लित मुख कमल वाली, निकुञ्ज भवन में विलास करने

---

*सङ्गत का अर्थ है (सम् × गम् × भावे'क्त') सौहार्द मिलता

वाली, राजा वृषभानु की राजकुमारी, श्रीव्रजराज कुमार की हृदयेश्वरी हे श्रीराधिके ! कब मुझे अपने कृपा कटाक्ष का पात्र बनाओगी ।

अशोकवृक्षवल्लरी-वितानमण्डपस्थिते
प्रवालज्वालपल्लव-प्रभारुणांघ्रिकोमले ।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥

भावार्थ—अशोक की लताओं से बने हुए "लता मन्दिर" में विराजमान और मूँगे, अग्नि तथा नवीन लाल-लाल पल्लवों के समान अरुण कान्तियुक्त कोमल चरणों वाली, भक्तों को अभीष्ट वरदान देने वाले तथा अभय दान देने के लिए उत्सुक रहने वाले कर कमलों वाली, अपार ऐश्वर्य की आलय स्वामिनी श्रीराधे मुझे कब अपने कृपा कटाक्ष का अधिकारी बनाओगी ।

अनङ्गरङ्गमङ्गलप्रसंगभङ्गुरभ्रुवां
सुविभ्रमं ससम्भ्रमं दृगन्तबाणपातनैः ।
निरन्तरं वशीकृत-प्रतीतनन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥*

भावार्थ—प्रेम क्रीड़ा के रङ्गमञ्च पर मङ्गलमय प्रसङ्ग में बांकी भृकुटी करके, आश्चर्य उत्पन्न करते हुए सहसा कटाक्ष

---

* जहाँ कहीं व्रजलीलाओं में काम, अनङ्ग आदि नाम आए हैं वहां प्रेम ही समझना चाहिए, क्योंकि 'प्रेमैव गोपरामाणां काम इत्यगमत् प्रथाम् ।"

रूपी बांणों की वर्षा से श्रीनन्दनन्दन को निरन्तर वस में करने वाली हे सर्वेश्वरी ! अपने कृपाकटाक्ष का पात्र मुझे कब बनाओगी।

तडित्सुवर्णचम्पक-प्रदीप्तगौरविग्रहे
मुखप्रभापरास्तकोटिशारदेन्दुमण्डले।
विचित्रचित्रसंचरच्चकोरशावलोचने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥

भावार्थ—बिजली, स्वर्ण तथा चम्पा के पुष्प के समान सुनहरी कान्ति से देदीप्यमान गोरे अङ्गों वाला, अपने मुखारविन्द की चांदनी से करोड़ों शरच्चन्द्रों को जीतनेवाली, क्षण-क्षण में विचित्र चित्रों की छटा दिखाने वाले चंचल चकोर के बच्चे के सदृश विलोचनों वाली, हे जगज्जननी ! क्या कभी मुझे अपने कृपा-कटाक्ष का अधिकारी बनाओगी ?

मदोन्मदातियौवने प्रमोदमानमण्डिते
प्रियानुरागरंजिते कलाविलासपण्डिते।
अनन्यधन्यकुंजराजश्यामकेलिकोविदे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥

भावार्थ—अपने अत्यन्त रूप यौवन के मद से मत्त रहने वाली, आनन्द भरा मान ही जिनका सर्वोत्तम भूषण है, प्रियतम के अनुराग से रंगी हुई, विलास की प्रवीण, अनन्य भक्त गोपिकाओं से धन्य हुए निकुञ्जराज्य के प्रेम कौतुक विद्या की विद्वान् श्री राधिके ! मुझे अपने कृपा कटाक्ष का पात्र कब बनाओगी ?

अशेषहावभावधीरहीरहारभूषिते
प्रभूतशातकुम्भकुम्भ-कुम्भिकुम्भसुस्तनि ।
प्रशस्तमन्दहास्यचूर्णपूर्णसौख्यसागरे*
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥

भावार्थ—सम्पूर्ण हाव-भावरूपी शृङ्गारों तथा धीरता एवं हीरे के हारों से विभूषित अङ्गों वाली, शुद्धस्वर्ण के कलशों के समान एवं गयन्दिनी के गण्डस्थल के समान मनोहर पयोधरों वाली, प्रशंसित मन्द मुस्कान से परिपूर्ण आनन्द-सिन्धु सदृश श्री राधिके ! क्या मुझे कभी अपनी कृपादृष्टि से कृतार्थ करोगी ?

मृणालबालवल्लरी तरङ्गरङ्गदोर्लते
लताग्रलास्यलोलनील-लोचनावलोकने ।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ-मुग्धमोहनाश्रये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥

भावार्थ—जल की लहरों से हिलते हुए कमल के नवीन नाल के समान जिनकी कोमल भुजाएँ हैं, पवन से जैसे लता का अग्र भाग नाचता है, ऐसे चञ्चल लोचनों से नीलिमा झलकाते

---

*समुद्र में जल होता है, किन्तु सौख्य (सुख) सिन्धु में मुसकान रूपी चूर्ण यहां लिखा गया है, इससे यह विचित्र सिन्धु है। चूर्ण का अर्थ है (चूर्ण+घञ) पीसने से उत्पन्न धूली, या पान में डालने वाले चूने के सदृश श्वेत वर्ण।

हुए जो अवलोकन करती हैं। ललचाने वाले, लुभा कर पीछे-पीछे फिरने वाले, मिलन में मन को हरने वाले मुग्ध मनमोहन को आश्रय देने वाली, हे श्री वृषभानु किशोरी ! कब अपने कृपा अवलोकन द्वारा मुझे मायाजाल से छुड़ाओगी।

सुवर्णमालिकांचिते त्रिरेखकम्बुकण्ठगे
त्रिसूत्रमंगलीगुण-त्रिरत्नदीप्ति-दीधिते।
सलोलनीलकुन्तले प्रसूनगुच्छगुम्फिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥

भावार्थ—स्वर्ण की मालाओं से विभूषित तथा तीन रेखाओं वाले शङ्ख को छटा सदृश सुन्दर कण्ठ वाली, तथा जिनके कण्ठ में मङ्गलमय त्रिसूत्र बँधा हुआ है, जिसमें तीन रङ्ग के रत्नों का भूषण लटक रहा है, रत्नों से देदीप्यमान किरणें निकल रही हैं (यह मङ्गल त्रिसूत्र, नव वधू को गले में पहनाया जाता है, यह ब्रज की प्राचीन प्रथा है, दक्षिण में अब भी यह प्रथा प्रचलित है) तथा दिव्य पुष्पों के गुच्छों से गूँथे हुए काले घुंघराले लहराते केशों वाली, हे सर्वेश्वरी श्री राधे ! कब मुझे अपनी कृपा दृष्टि से देखकर अपने चरणकमलों के दर्शन का अधिकारी बनाओगी।

नितम्बबिम्बलम्बमान-पुष्पमेखलागुण-
प्रशस्तरत्नकिङ्किणी-कलापमध्यमंजुले।
करीन्द्रशुण्डदण्डिकावरोहसौभगोरुके
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥

भावार्थ—कटिमण्डल में मणिमय किंकणी सुशोभित है जिसमें सोने के फूल रत्नों से जड़े हुए लटक रहे हैं, तथा उसकी प्रशसनीय झनकार अत्यन्त मनोहर है। गजेन्द्र की सूंड के समान जिनकी जङ्घाएँ अत्यन्त सुन्दर हैं। ऐसी हे श्री राधे महारानी! मुझ पर कृपा करके कब संसार सागर से पार लगाओगी?

अनेकमन्त्रनादमञ्जु-नूपुरारवस्खलत्
समाजराजहंसवंश-निक्वणातिगौरवे।
विलोलहेमवल्लरी-विडम्बिचारुचङ्क्रमे
करा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥

भावार्थ—अनेक वेद मन्त्रों की सुमधुर झनकार करने वाले स्वर्णमय नूपुर चरणों में ऐसे प्रतीत होते हैं, मानों मनोहर हंसों की पंक्ति कूज रही हो। चलते समय अङ्गों की छबि ऐसी लगती है मानो स्वर्णलता लहरा रही हो। हे जगदीश्वरी श्री राधे! क्या कभी मैं आपके चरणकमलों का दास हो सकूँगा?

अनन्तकोटिविष्णुलोक-नम्रपद्मजार्चिते
हिमाद्रिजापुलोमजा-विरिञ्चिजावरप्रदे।
अपारसिद्धिवृद्धिदिग्ध-सत्पदांगुलीनखे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥

भावार्थ—अनन्त कोटि वैकुण्ठों की स्वामिनी श्रीलक्ष्मी जी भी आपकी पूजा करती हैं, तथा श्रीपार्वती जी, इन्द्राणी जी

और सरस्वती जी ने भी आपकी पूजा कर वरदान पाया है। आपके चरणकमलों की एक उँगली के नख का भी ध्यान करने मात्र से अपार सिद्धियों का समूह बढ़ने लगता है। हे करुणामयी ! आप कब मुझको वात्सल्य-रस भरी दृष्टि से देखोगी ?

मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेदभारतीश्वरि प्रमाणशासनेश्वरि ।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोदकाननेश्वरि
व्रजेश्वरि व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते ॥

भावार्थ—सब प्रकार के यज्ञों की आप स्वामिनी हैं सम्पूर्ण क्रियाओं की स्वामिनी, स्वधादेवी की स्वामिनी, सब देवताओं की स्वामिनी (ऋक्, यजु, साम) इन तीनों वेदों की वाणियों की स्वामिनी, प्रमाण शासन शास्त्र की स्वामिनी, श्रीरमादेवी की स्वामिनी, श्रीक्षमादेवी की स्वामिनी और (अयोध्या के) प्रमोद वन की स्वामिनी (अर्थात् श्रीसीताजी) आप ही हैं। हे श्रीराधिके ! कब मुझे कृपा कर अपनी शरण में स्वीकारकर पराभक्ति प्रदान करोगी ! हे ब्रजेश्वरी, हे ब्रज की अधिष्ठात्री श्रीराधिके ! आपको मेरा बारम्बार प्रणाम है।

इतीदमद्भुतस्तवन्निशम्य भानुनन्दिनी
करोतु संततं जनं कृपा कटाक्षभाजनम् ॥
भवेत्तदैवसंचित-त्रिरूपकर्मनाशनं
लभेत्तदा व्रजेन्द्रसूनु-मण्डलप्रवेशनम् ॥

भावार्थ—हे वृषभानुनन्दिनी! मेरी इस विचित्र स्तुति को सुनकर सर्वदा के लिए मुझ दास को अपनी दयादृष्टि का अधिकारी बना लो। बस, आपकी दया ही से तो मेरे (प्रारब्ध संचित और क्रियमाण) इन तीनों प्रकार के कर्मों का नाश हो जायगा और उसी क्षण श्रीकृष्णचन्द्र के नित्य मण्डल (दिव्यधाम की लीलाओं में) सदा के लिए प्रवेश हो जाएगा।

राकायां च सिताष्टम्यां दशम्यां च विशुद्धया।
एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकः सुधीः॥
यं यं कामयते कामं, तं तं प्राप्नोति साधकः।
राधाकृपाकटाक्षेण, भक्तिः स्यात् प्रेमलक्षणा॥

भावार्थ—पूर्णिमा के दिन, शुक्लपक्ष की अष्टमी या दशमी को तथा दोनों पक्षों की एकादशी और त्रयोदशी को जो शुद्ध बुद्धि वाला भक्त इस स्तोत्र का पाठ करेगा वह जो भावना करेगा वही प्राप्त होगी, अन्यथा निष्काम भावना से पाठ करने पर श्रीराधाजी की दयादृष्टि से पराभक्ति प्राप्त होगी।

उरुमात्रे नाभिमात्रे, हृन्मात्रे कण्ठमात्रके।
राधाकुण्ड-जले स्थित्वा, यः पठेत्साधकः शतम्॥
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात्, वांछितार्थफलं लभेत्।
ऐश्वर्यं च लभेत् साक्षाद्, दृशा पश्यति राधिकाम्॥
तेन सा तत्क्षणादेव, तुष्टा दत्ते महावरम्।
येन पश्यन्ति नेत्राभ्यां, तत्प्रियं श्यामसुन्दरम्॥

नित्य-लीला-प्रवेशं च, ददाति श्रीव्रजाधिपः ।
अतः परतरं प्रार्थ्यं वैष्णवानां न विद्यते ॥

भावार्थ - इस स्तोत्र से श्री राधा-कृष्ण का साक्षात्कार होता है, उसकी विधि इस प्रकार है कि (गोवर्धन पर्वत के निकट) श्रीराधाकुण्ड के जल में जङ्घाओं तक या नाभि पर्यन्त या छाती तक या कण्ठ तक जल में खड़े होकर इस स्तोत्र का १०० बार पाठ करे । इस प्रकार कुछ दिन पाठ करने पर सम्पूर्ण मनोवांछित पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं। ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। दर्शनार्थी भक्त को इन्हीं नेत्रों से साक्षात् श्रीराधाजी का दर्शन होता है । श्रीराधाजी प्रकट होकर प्रसन्नतापूर्वक महान् वरदान देती हैं (अथवा अपने चरणों का महावर (यावक) भक्त के मस्तक पर लगा देती हैं) वरदान में केवल 'अपनी प्रिय वस्तु दो" यही मांगना चाहिये । तब तत्काल ही श्याम-सुन्दर प्रकट होकर दर्शन देते हैं। प्रसन्न होकर श्रीव्रज-राजकुमार नित्य लीलाओं में प्रवेश प्रदान करते हैं। इससे बढ़कर वैष्णवों के लिए कोई भी वस्तु नहीं है। किसी-किसी को राधाकुण्ड के जल में १०० पाठ करने पर एक ही दिन में दर्शन हो जाता है। किसी-किसी को महिनों में होता है। इस लिए जब तक दर्शन न हो पाठ करते रहें। किसी-किसी को अपने घर में १०० पाठ रोज करने से कुछ दिनों में इष्ट प्राप्ति हो जाती है।





श्रीकृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
सुभक्तचित्तरंजनं सदैवनन्दनन्दनम् ।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम् ।।

भावार्थ—व्रजमण्डल के भूषण तथा समस्त पापों के नाश करने वाले, सच्चे भक्त के चित्त में विहार कर आनन्द देने वाले नन्दनन्दन का मैं सर्वदा भजन करता हूँ। जिनके मस्तक पर मनोहर मोर पंखों के गुच्छे हैं, जिनके हाथों में सुरीली मुरली है तथा जो प्रेम-तरङ्गों के समुद्र हैं, उन नटनागर श्रीकृष्ण भगवान् को मेरा नमस्कार है।

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम् ।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम् ।।

भावार्थ—कामदेव का गर्वनाश करने वाले, बड़े-बड़े चंचल लोचन वाले, ग्वाल-बालों का शोक नष्ट करने वाले, कमल-लोचन का मेरा नमस्कार है। कर-कमल पर गोवर्धन पर्वत धारण करने वाले, मुसकान युक्त सुन्दर चितवन वाले, इन्द्र का मान मर्दन करने वाले, गजराज के सदृश मत्त श्रीकृष्ण भगवान् को मेरा नमस्कार है।

कदम्बसूनुकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं
व्रजाङ्गनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् ।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम् ।।

भावार्थ—कदम्ब के पुष्प के कुण्डल धारण करने वाले अत्यन्त सुन्दर गोल कपोलों वाले, व्रजाङ्गनाओं के प्रियतम परम दुर्लभ श्रीकृष्ण भगवान् को मेरा नमस्कार है। ग्वाल-बाल और श्रीनन्दरायजी के सहित मोदमयी यशोदाजी को आनन्द देने वाले, श्रीगोपनायक को मेरा नमस्कार है।

सदैव पादपङ्कजं मदीयमानसे निजं
दधानमुत्तमालकं नमामि नन्दबालकम् ।

समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् ॥

भावार्थ—मेरे हृदय में सदा अपने चरण-कमलों को स्थापन करने वाले, सुन्दर घुँघराली अलकों वाले, नन्दलाल को मैं नमस्कार करता हूँ। समस्त दोषों को भस्म कर देने वाले, समस्त लोकों का पालन करने वाले, समस्त गोपकुमारों के हृदय तथा श्रीमन्दरायजी की वात्सल्य-लालसा के आधार श्रीकृष्ण को मेरा नमस्कार है।

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम्।
दृगन्तकान्तभंगिनं सदासदालिसंगिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम् ॥

भावार्थ—भूमि का भार उतारने वाले, भवसागर से तारने वाले, कर्णधार श्रीयशोदाकिशोर चित्तचोर को मेरा नमस्कार है। कमनीय कटाक्ष चलाने की कला में प्रवीण, सर्वदा दिव्य सखियों से सेवित, नित्य नये-नये प्रतीत होने वाले, नन्द-लाल को मेरा नमस्कार है।

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं*
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम्।

---

* परं के अर्थ 'श्रेष्ठ, प्रधान, ब्रह्म' आदि कहे जाते हैं। कृपा करने में श्रेष्ठ, कृपाप्रधान हृदय वाले तथा कृपामय मूर्तिमान् ब्रह्म यह तीनों अर्थ भी यहां लग जाते हैं।

नवीनगोपनागरं नवीनकेलि-लम्पटं
नमामि मेघसुन्दरं-तडित्प्रभालसत्पटम् ॥

भावार्थ—गुणों की खानि और आनन्द के निधान, कृपा करने वाले, तथा कृपा-पर (अर्थात् कृपा करने के लिए तत्पर) देवताओं के शत्रु दैत्यों का नाश करने वाले, गोपनन्दन को मेरा नमस्कार है। नवीन-गोप-सखा नटवर, नवीन नवीन खेल खेलने के लिए लालायित, घनश्यामल अङ्गों वाले, और बिजली-सदृश सुन्दर पीताम्बरधारी श्रीकृष्ण भगवान् को मेरा नमस्कार है।

समस्त-गोप-मोहनं हृदम्बुजैकमोदनं
नमामि कुंजमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम् ।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुशायकं
रसालवेणुगायकं नमामि कुंजनायकम् ॥

भावार्थ—समस्त गोपों को मोहित करने वाले, हृदय-कमल को प्रफुल्लित करने वाले, निकुञ्ज के बीच में विराजमान प्रसन्न मन, सूर्य के समान प्रकाशमान श्रीकृष्ण भगवान् को मेरा नमस्कार है। सम्पूर्ण अभिलषित कामनाओं को पूर्ण करने वाले, बाणों के समान चोट करने वाली चितवन वाले, मधुर मुरली में गीता गाने वाले, निकुञ्जनायक को मैं नमस्कार करता हूँ।

विदग्ध-गोपिकामनो-मनोज्ञ-तल्प-शायिनं
नमामि कुंजकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम् ।

किशोरकान्तिरंजितं   दृगंजनंसुशोभितं
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम् ॥

भावार्थ—चतुर गोपिकाओं के मन की मनोरम शय्या पर शयन करने वाले, कुञ्जवन में बढ़ी हुई (विरह) अग्नि को पान करने वाले, तथा वृषभानुकिशोरी की अङ्ग कान्ति से जिनके अङ्ग झलक रहे हैं, जिनके नेत्रों में अञ्जन शोभा दे रहा है, गजराज को मोक्ष देने वाले, तथा श्रीजी के साथ विहार करने वाले, श्रीकृष्ण भगवान् को मेरा नमस्कार है।

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।
प्रमाणितं स्तवद्वयं पठन्ति प्रातरुत्थिताः
त एव नन्दनन्दनं मिलन्ति भावसंस्थिताः॥

भावार्थ—जहां कहीं भी जैसी परिस्थिति में मैं रहूँ सदा श्रीकृष्णचन्द्र की सरस कथाओं का मेरे द्वारा सर्वदा गान होता रहे बस ऐसी कृपा बनी रहे। "श्रीकृष्ण कृपा-कटाक्ष स्तोत्र" तथा "श्रीराधा कृपा-कटाक्ष स्तोत्र" इन दोनों सिद्ध स्तोत्रों को जो प्रातःकाल उठकर भक्ति-भाव में स्थित होकर नित्य पाठ करते है, उनको साक्षात् श्रीकृष्णचन्द्र मिलते हैं।





श्रीराम रक्षा-स्तोत्रम्



श्रीराम रक्षा स्तोत्र से सहस्रों नर-नारियों ने सकाम एवं निष्काम अनुष्ठान के भक्तियुक्त पुरश्चरण द्वारा लाभ उठाया है। मनोकामना की पूर्ति के लिए प्रत्यक्ष फल देने वाला यह अमोघ रामबाण है।

राम रक्षा स्तोत्र के पुरश्चरण लिए निम्नोक्त नियम ध्यान में रखने चाहिए:—

१—जिस कामना के लिए अनुष्ठान करना हो उसे मन में रखकर इच्छित फल प्राप्ति के लिए प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पवित्रता से अनुष्ठान करना चाहिए।

२—चैत्र नवरात्र एवं कार्तिक नवरात्र के दिनों में नौ दिनों का अनुष्ठान अमोघ फल दायक है।

३— शुद्ध घी का दीपक जलाकर श्रीराम पंचा-यतन की मूर्ति सामने रखे और षोडशोपचार मन्त्रों से भगवान् का पूजन करे। तत्पश्चात् घी का दीपक जलाकर ११ बार एकाग्र चित्तसे रामरक्षा स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

४—इस प्रकार ९ दिनों तक पाठ चलता रहे और दसवें दिन विजयादशमी या रामनवमी के दिन पाठ समाप्ति के बाद निम्न श्लोक पढ़ते हुए १०८ बार आहुति दें।

आहुति का मन्त्र—

आपदामपहर्तारं, दातारं सर्व सम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं, भूयो भूयो नमाम्यहम्॥

(श्रीराम पूजनार्थ एवं हवन विधि के लिए हमारी—"मानस के अनुष्ठान" नामक पुस्तक से सहायता ली जा सकती है)

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्री सीतारामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान् कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षा-स्तोत्रजपे विनियोगः ।

भावार्थ—इस रामरक्षास्तोत्र-मन्त्र के बुधकौशिक ऋषि हैं सीता और रामचन्द्र देवता हैं, अनुष्टुप् छन्द है सीता शक्ति है, श्रीमान् हनुमान्जा कीलक हैं तथा श्रीरामचन्द्रजी की प्रसन्नता के लिए रामरक्षास्तोत्र के जप में विनियोग किया जाता है ।

अथ ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ॥१॥

भावार्थ—ध्यान-जो धनुष-वाण धारण किए हुए हैं बद्ध-पद्मासन से विराजमान हैं, पीताम्बर पहने हुए हैं, जिनके प्रसन्न नयन नूतन कमल दल से स्पर्धा करते तथा वाम भाग में विराज-मान श्रीसीताजी के मुखकमल से मिले हुए हैं, उन आजानुबाहु, मेघश्याम, नाना प्रकार के अलङ्कारों से शोभित विशाल जटा-जूटधारी श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान करे ।

चरितं रघुनाथस्य, शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां, महापातकनाशनम् ॥१॥

भावार्थ—श्रीरघुनाथजी का चरित्र सौ करोड़ विस्तार वाला है और उसका एक-एक अक्षर भी मनुष्यों के महान् पापों को नष्ट करने वाला है।

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं, रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं, जटामुकुटमण्डितम् ॥२॥
सासितूणधनुर्बाण, पाणिं नक्तंचरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत्त्रातु, माविर्भूतमजं विभुम् ॥३॥
रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः, पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।

भावार्थ—जो नीलकमल दल के समान श्यामवर्ण, कमल-नयन, जटाओं के मुकुट से सुशोभित, हाथों में खड्ग, तूणीर, धनुष और बाण धारण करने वाले, राक्षसों के संहारकारी तथा संसार की रक्षा के लिए अपनी लीला से अवतीर्ण हुए हैं उन अजन्मा और सर्वव्यापक भगवान् राम का जानकी और लक्ष्मणजी के सहित स्मरण कर प्राज्ञ पुरुष इस सर्वकामप्रदा और पाप नाशक राम रक्षा का पाठ करे।

शिरो मे राघवः पातु, भालं दशरथात्मजः ॥४॥
कौसल्येयो दृशौ पातु, विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता, मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥५॥

भावार्थ—मेरे शिर की राघव,और ललाट की दशरथात्मज रक्षा करें। कौसल्यानन्दन नेत्रों की रक्षा करें, विश्वामित्र-प्रिय कानों को सुरक्षित रखें, तथा यज्ञरक्षक घ्राण की, और सौमित्रिवत्सल मुख की रक्षा करें।

जिह्वां विद्यानिधिः पातु, कण्ठं भरतवन्दितः ।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु, भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥६॥

मेरी जिह्वा की विद्यानिधि, कण्ठ की भरतवन्दित, कन्धों की दिव्यायुध, और भुजाओं की भग्नेशकार्मुक (महादेवजी का धनुष तोड़ने वाले) रक्षा करें ।

करौ सीतापतिः पातु, हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी, नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥७॥

भावार्थ—हाथों की सीतापति, हृदय की जामदग्न्यजित् (परशुराम को जीतने वाले), मध्य भाग की खरध्वंसी (खर नाम के राक्षस का नाश करने वाले) और नाभि की जाम्बवदाश्रय (जाम्बवान् के आश्रयस्वरूप) रक्षा करें ।

सुग्रीवेशः कटी पातु, सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरू रघुत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ॥८॥

भावार्थ—कमर की सुग्रीवेश (सुग्रीव के स्वामी), सक्थियों की हनुमत्प्रभु, और ऊरुओं की राक्षसकुल-विनाशक रघुश्रेष्ठ रक्षा करें ।

जानुनी सेतुकृत्पातु जङ्घे, दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः, पातु रामोऽखिलं वपुः ॥९॥

भावार्थ—जानुओं की सेतुकृत्, जङ्घाओं की दशमुखान्तक (रावण को मारने वाले) और सम्पूर्ण शरीर की श्रीराम रक्षा करें ।

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्री, विजयी विनयी भवेत् ॥१०॥

भावार्थ—जो पुण्यवान् पुरुष रामबल से सम्पन्न इस रक्षा स्तोत्र का पाठ करता है वह दीर्घायु, सुखी, पुत्रवान्, विजयी, और विनय सम्पन्न हो जाता है ।

पातालभूतलव्योम, चारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते, रक्षितं रामनामभिः ॥११॥

भावार्थ—जो जीव पाताल, पृथ्वी अथवा आकाश में विचरते हैं और जो छद्मवेष से घूमते रहते हैं वे रामनामों से सुरक्षित पुरुष को देख भी नहीं सकते ।

रामेति रामभद्रेति, रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापं, भुक्तिं मुक्तिञ्च विन्दति ॥१२॥

भावार्थ—'राम' 'रामभद्र' 'रामचन्द्र' इन नामों का स्मरण करने से मनुष्य पापों से लिप्त नहीं होता, तथा भोग और मोक्ष प्राप्त कर लेता है ।

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण, रामनाम्नाभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य, करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥१३॥

भावार्थ—जो पुरुष जगत् को विजय करने वाले, एकमात्र मन्त्र रामनाम से सुरक्षित इस स्तोत्र को कण्ठस्थ कर लेता है, सम्पूर्ण सिद्धियां उसके हस्तगत हो जाती हैं ।

वज्रपंजरनामेदं, यो रामकवचं स्मरेत ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र, लभते जयमङ्गलम् ॥१४॥

भावार्थ—जो मनुष्य वज्रपञ्जर नामक इस राम कवच का स्मरण करता है उसकी आज्ञा का कहीं उल्लङ्घन नहीं होता और उसे सर्वत्र जय और मङ्गल की प्राप्ति होती है।

आदिष्टवान्यथा स्वप्ने, रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान्प्रातः, प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥१५॥

भावार्थ—श्रीशङ्कर ने रात्रि के समय स्वप्न में इस रामरक्षा का जिस प्रकार आदेश दिया था, उसी प्रकार प्रातःकाल जागने पर, बुधकौशिक ऋषि ने इसे लिख दिया।

आरामः कल्पवृक्षाणां, विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां, रामः श्रीमान्स नः प्रभुः॥

भावार्थ—जो मानो कल्पवृक्षों के बगीचे हैं, तथा समस्त आपत्तियों का अन्त करने वाले हैं, जो तीनों लोक में परम सुन्दर हैं, वे श्रीमान् राम हमारे प्रभु हैं।

तरुणौ रूपसम्पन्नौ, सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ, चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥१७॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ, तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ, भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥१८॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां, श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षःकुलनिहन्तारौ, त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥१९॥

भावार्थ—जो तरुण अवस्था वाले, रूपवान्, सुकुमार, महाबली, कमल के समान विशाल नेत्र वाले, चीरवस्त्र और कृष्ण मृगचर्मधारी, फल-मूल आहार करने वाले, संयमी, तपस्वी,

ब्रह्मचारी, सम्पूर्ण जीवों को शरण देने वाले, समस्त धनुर्धारियों मे श्रेष्ठ, और राक्षसकुल का नाश करने वाले हैं वे रघुश्रेष्ठ दशरथकुमार राम और लक्ष्मण दोनों भाई हमारी रक्षा करें।

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशा-
वक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणा-
वग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ।।

भावार्थ— जिन्होंने संधान किया हुआ धनुष ले रखा है, जो बाण का स्पर्श कर रहे हैं, तथा अक्षय बाणो से युक्त तूणीर लिए हुए हैं, वे राम और लक्ष्मण मेरो रक्षा करने के लिए मार्ग में सदा ही मेरे आगे चलें।

सन्नद्धः कवची खड्गी, चापबाणधरो युवा ।
गच्छन्मनोरथान्नश्च, रामः पातु सलक्ष्मणः।।

भावार्थ—सर्वदा उद्यत, कवचधारी, हाथ में खड्ग लिये धनुष-बाण धारण किए, तथा युवा अवस्था वाले भगवान् राम लक्ष्मण जी के सहित (आगे-आगे) चलकर हमारे मनोरथों की रक्षा करें।

रामो दाशरथिः शूरो, लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः, कौसल्येयो रघूत्तमः ।।
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः, पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमन्नप्रमेयपराक्रमः ।।

इत्येतानि जपन्नित्यं,मद्भक्तः श्रद्धायान्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं, सम्प्राप्नोति न संशयः ।।

भावार्थ—(भगवान् का कथन है कि) राम, दाशरथि, शूर, लक्ष्मणानुचर, बली, काकुत्स्थ, पुरुष, पूर्ण, कौसल्येय रघूत्तम. वेदान्तवेद्य, यज्ञेश, पुराणपुरुषोत्तम, जानकीवल्लभ, श्रीमान् और अप्रमेय-पराक्रम—इन नामों का नित्यप्रति श्रद्धापूर्वक जप करने से मेरा भक्त अश्वमेध यज्ञ से भी अधिक फल प्राप्त करता है—इसमें कोई सन्देह नहीं।

रामं दूर्वादलश्यामं, पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यै,र्न ते संसारिणो नराः ।।

भावार्थ—जो लोग दूर्वादल के समान श्यामवर्ण, कमलनयन, पीताम्बरधारी, भगवान् राम का इन दिव्य नामों से स्तवन करते हैं, वे संसारचक्र में नहीं पड़ते ।

रामं लक्ष्मणपूर्वजं, रघुवरं, सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं, गुणनिधिं, विप्रप्रियं धार्मिकं ।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं,दशरथतनयं, श्यामलं शान्तमूर्ति
वन्दे लोकाभिरामं,रघुकुलतिलकं,राघवं रावणारिम्

भावार्थ—लक्ष्मण जी के पूर्वज, रघुकुल श्रेष्ठ, सीता जी के स्वामी, अति सुन्दर, ककुत्स्थकुलनन्दन, करुणाकर, गुणनिधान, ब्राह्मणभक्त, परम धार्मिक, राजराजेश्वर, सत्यनिष्ठ, दशरथपुत्र, श्याम और शान्तमूर्ति, सम्पूर्ण लोकों में सुन्दर, रघुकुलतिलक, राघव और रावणारि भगवान् को मैं वन्दना करता हूं ।

रामाय रामभद्राय, रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय, सीतायाः पतये नमः ॥

भावार्थ—राम, रामभद्र, रामचन्द्र, विधातृस्वरूप, रघुनाथ प्रभु सीतापति को नमस्कार है।

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥

भावार्थ—हे रघुनन्दन श्रीराम ! हे भरताग्रज भगवान् राम ! हे रणधीर प्रभु राम ! आप मेरे आश्रय होइए ।

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

भावार्थ—मैं श्रीरामचन्द्र के चरणों का मन में स्मरण करता हूं, श्रीरामचन्द्र के चरणों का वाणी से कीर्तन करता हूँ, श्रीरामचन्द्र के चरणों को सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ तथा श्रीरामचन्द्र के चरणों की शरण लेता हूँ ।

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।

सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥

भावार्थ—राम मेरी माता हैं, राम मेरे पिता हैं; राम स्वामी हैं और राम मेरे सखा हैं। दयामय रामचन्द्र ही मेरे सर्वस्व हैं। उनके सिवा और किसी को मैं नहीं जानता।

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य, वामे च जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य, तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥

भावार्थ—जिनकी दाईं ओर लक्ष्माजी, बाईं ओर जानकी जी, और सामने हनुमान जी विराजमान हैं उन रघुनाथ जी की मैं वन्दना करता हूँ।

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं, श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥

भावार्थ—जो सम्पूर्ण लोकों में सुन्दर, रणक्रीड़ा में धीर कमल नयन, रघुवंशनायक करुणामूर्ति और करुणा के भण्डार हैं उन श्रीरामचन्द्रजी की मैं शरण लेता हूँ।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

भावार्थ—जिनकी मन के समान गति और वायु के समान वेग है, जो परम जितेन्द्रिय और बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हैं, उन पवननन्दन वानराग्रगण्य श्रीरामदूत की मैं शरण लेता हूं।

कूजन्तं रामरामेति, मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां, वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ।।

भावार्थ—कविता की डाली पर बैठकर मधुर अक्षरों वाले 'राम-राम' इस मधुर नाम को कूजते हुए, वाल्मीकिरूप कोकिल की मैं वन्दना करता हूँ ।

आपदामपहर्तारं, दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं, भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।

भावार्थ—आपत्तियों को हरने तथा सब प्रकार की सम्पत्ति प्रदान करने वाले, लोकाभिराम भगवान् राम को बारम्बार नमस्कार करता हूँ ।

भर्जनं भवबीजाना,-मर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां, रामरामेति गर्जनम् ।।

भावार्थ—'राम-राम' ऐसा घोष करना सम्पूर्ण संसार-बीजों को भून डालने वाला, समस्त सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति कराने वाला, तथा यमदूतों को भयभीत करने वाला है ।

रामो राजमणिः सदा विजयते, रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमूं, रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं, रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे, भो राम मामुद्धर ।।

भावार्थ—रामरूप राजमणि सदा विजय को प्राप्त होतो है । मैं लक्ष्मीपति भगवान् राम का भजन करता हूँ । जिन रामचन्द्रजी ने सम्पूर्ण राक्षससेना का ध्वंस कर दिया था, मैं उनको

प्रणाम करता हूँ। राम से बड़ा और कोई भी आश्रय नहीं है। मैं उन रामचन्द्रजी का दास हूं। मेरा चित्त सदा राम में ही लीन रहे; हे राम! आप मेरा उद्धार कोजिए।

राम रामेति रामेति, रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं, रामनाम वरानने॥

भावार्थ—(श्री महादेवजी पार्वती जी से कहते हैं—) हे सुमुखि! रामनाम विष्णुसहस्रनाम के तुल्य है। मैं सर्वदा 'राम, राम, राम' इस प्रकार मनोरम राम-नाम में ही रमण करता हूं।



भगवती राधिका की वन्दना

नमस्ते परमेशानि, रासमण्डलवासिनी,
रासेश्वरि नमस्तेऽस्तु, कृष्ण प्राणाधिकप्रिये।
नमस्त्रैलोक्यजननि, प्रसीद करुणार्णवे,
ब्रह्मविष्ण्वादिभिर्देवै, - र्वन्द्यमानपदाम्बुजे ॥
नमः सरस्वतीरूपे, नमः सावित्रि शंकरि,
गङ्गा पद्मावतीरूपे, षष्ठि मङ्गलचण्डिके।
नमस्ते तुलसीरूपे, नमो लक्ष्मीस्वरूपिणि,
नमो दुर्गे भगवती, नमस्ते सर्वरूपिणि ॥
मूलप्रकृतिरूपां त्वां, भजामः करुणार्णवाम्,
संसारसागरादस्मानुद्धराम्ब दयां कुरु।
इदं स्तोत्रं त्रिसंध्यं यः, पठेद् राधां स्मरन्नरः,
न तस्य दुर्लभं किंचित्कदाचिच्च भविष्यति ॥
देहान्ते च वसेन्नित्यं, गोलोके रास मण्डले,
इदं रहस्यं परमं, न चाख्येयं तु कस्यचित्।



दिव्य—सूक्ति

जिह्वे कीर्तय केशवं मुररिपुं, चेतो भज श्रीधरं
पाणिद्वंद समर्चया च्युतकथां, श्रोत्रद्वय त्वं शृणु।
कृष्णं लोकय लोचनद्वय हरे,-र्गच्छांघ्रियुग्मालयं
जिघ्र घ्राण मुकुन्दपादतुलसीं, मूर्द्धन्नमाधोक्षजम्।

हे जिह्वे! केशव का कीर्तन कर; चित्त! मुरारि को भज; युगलहस्त! श्रीधर की अर्चना करो, हे युगलश्रवणो, तुम अच्युत को कथा श्रवण करो; नेत्रो ! श्रीकृष्ण का दर्शन करो;

युगलचरणो ! भगवत्-स्थानों में भ्रमण करो; नासिके ! मुकुन्दचरण-सेविता तुलसी की सुगंध ले; हे मस्तक ! भगवान् अधोक्षज के सामने झुक,…… ……… ……… !!

× × ×

सत्यं माता, पिता ज्ञानं, धर्मो भ्राता, दया सखा।
शान्तिः पत्नी, क्षमा पुत्रः, षडेते मम बान्धवाः॥

× × ×

नास्ति गंगासमं तीर्थं, नास्ति मातृ समो गुरुः।
नास्ति विष्णुसमं देवं, नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥

ॐ शान्तिः × शान्तिः × शान्तिः ×

प्रार्थना

वह शक्ति हमें दो दयानिधे।

कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।।

पर-सेवा पर-उपकार में हम,

जग जीवन सफल बना जावे।।

हम दीन-दुखी निबलों विकलों,

के सेवक बन संताप हरें।

जो हैं अटके भूले भटके,

उनको तारें खुद तर जावें।।

छल दंभ द्वेष पाखंड झूठ,

अन्याय से निशिदिन दूर रहें।

जीवन हो शुद्ध सरल अपना,

शुचि प्रेम सुधारस बरसावें।।

निज आन-कान मर्यादा का,

प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।

जिस देश जाति में जन्म लिया,

बलिदान उसी पर हो जावें।।

हमारे प्रकाशन

देवी शकुन्तला गोस्वामी विरचित

१. मोहन माधुरी
२. भाव मंजरी
३. कीर्तन माधुरी (भाग १)
४. कीर्तन माधुरी (भाग २)
५. भाव सौरभ
६. मानस मन्त्र
७. मानस के अनुष्ठान
८. योग प्रवेशिका

प्रेस में—

१ नटखट श्याम
२ निर्मोही श्याम
३ संक्षिप्त ज्ञानेश्वरी

प्राप्ति स्थान

श्रीराधारंजन सेवा संघ

राधानिवास
वृन्दावन (उ० प्र०)

७७ धर्मतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता-१३